MAHD - 05

December - Examination 2015

MAHD Examination

नाटक और कथेतर गद्य विधाएँ

Paper - MAHD - 05

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

निर्देश :–

1) यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों, अ खण्ड, ब खण्ड, और स खण्ड में विभाजित है। खण्ड 'अ' अति लघुत्तरात्मक है, खण्ड 'ब' लघुत्तरात्मक एवं खण्ड 'स' में निबंधात्मक प्रश्न सम्मिलित हैं।

(खण्ड – अ) 8 x 2 = 16

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं। आप अपने उत्तर को एक शब्द, एक वाक्य या अधिकत 30 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न दो अंक का है।

1) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

(i) खड़ी बोली में लिखा गया हिन्दी का पहला नाटक कौन सा है?

(ii) मूर्छित चन्द्रगुप्त की सिंह से रक्षा किसने की?

(iii) हिन्दी की पहली आत्मकथा किसने लिखी?

(iv) गणतंत्र के ठिठुरने का आशय क्या है?

(v) श्रृंखला की कड़िया किस तरह की रचना है?

(vi) रिपोर्ताज किस भाषा का शब्द है?

(vii) आवारा मसीहा किस लेखक की जीवनी है?

(viii) हजारी प्रसाद द्विवेदी के किन्हीं दो उपन्यासों का नामोल्लेख कीजिए।

(खण्ड – ब) 4 x 8 = 32

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से कोई चार प्रश्न कीजिए। शब्द सीमा लगभग 200 शब्द हैं। प्रत्येक प्रश्न 8 अंक का है।

2) स्वतन्त्रता आन्दोलन ने हिन्दी रंगमंच को किस तरह प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।

3) 'अंधायुग' की संवाद योजना पर प्रकाश डालिए।

4) 'पैर तले की जमीन' की विषय वस्तु की समसामयिकता को स्पष्ट कीजिए।

5) ''लोक संस्कृति से विद्यानिवास मिश्र का गहरा लगाव है।'' पठित निबंध के आधार पर उक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।

6) दलित आत्मकथाओं पर एक टिप्पणी लिखिए।

7) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

''मगध की राजकुमारी आज अपने ही उपवन में बंदिनी है। मैं वही तो हूँ जिसके संकेत पर मगध का राज्य चल सकता था। वही शरीर है, वही रूप है, वही हृदय है पर छिन गया अधिकार और मनुष्य का मानदण्ड ऐश्वर्य। तब तुलना में सबसे छोटी हूँ। जीवन लज्जा की रंगभूमि बन रहा है। तो जब नंदकुल का कोई न रहा, तब वह बचकर क्या करेगी।

8) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''अठारह दिनों के इस भीषण संग्राम में
कोई नहीं केवल मैं मरा हूँ करोड़ों बार
अश्वत्थामा के अंगों से
रक्त, स्वेद पीव बनकर बहूँगा
मैं ही युग युगान्तर तक
जीवन हूँ मैं
तो मृत्यु भी तो मैं ही हूँ माँ
शाप यह तुम्हारा स्वीकार है।''

9) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

''आकाश में हवाई जहान नहीं थे और न ही बम गिर रहे थे। किन्तु चारों तरफ आग दहक रही थी। जिससे लपटों की जगह कंकाल उठ रहे थे, जिसमें औरतों का सतीत्व भस्म हो रहा था। वह आग एक प्राचीन संस्कृति को भून रही थी।''

(खण्ड – स) 2 x 16 = 32

निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो का उत्तर दीजिए। शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 16 अंक का है।

10) हिन्दी निबंध के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान को विस्तार से समझाइये।

11) 'अंधायुग के पात्र प्रतिकात्मक और मनोवैज्ञानिक रंगत लिए हुए हैं।'' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

12) बालमुकुन्द गुप्त के जीवन एवं रचनाओं का परिचय दीजिए।

13) व्यंग्य विद्या के आधार पर ''ठिठुरता हुआ गणतंत्र की'' समीक्षा कीजिए

———